10

दक्षिणी राज्य

रहूबियाम के राज्यारोहण से यरुशलेम के विनाश तक 722-586 ई.पू. (1 राजा 12-22; 2 राजा 1-25; 2 इति. 10-36)[1]

परिचायक। –सामरिया के पतन से इस्राएल के राज्य का अंत हो गया जिससे दोहरे राज्य का काल समाप्त हो गया। यहूदा लगभग एक सौ पचास वर्ष तक रहा; और सामरिया का बंदी होने की घटना यहूदा के लिए इस्राएल से कहीं कम महत्व की थी, जिस कारण हम यहूदा के चार सौ वर्ष के इतिहास को एक काल मानकर एकता रख सकते हैं।

यहूदा का इतिहास एक बड़े नाम के महत्व के बने रहने का उदाहरण है। दाऊद के शासन से राजा और राज्य आदर्श रूप में मिल गए थे। भविष्यवाणी की आशाएं और देश की स्वाभाविक प्रवृत्ति उसके और उसके परिवार के इर्द-गिर्द घूमती थी। सुलैमान की मूर्तिपूजा के नैतिक सदमे के बाद, वे कुछ समय के लिए यारोबाम और उज़री राज्य के पास इकट्ठे हुए। रहूबियाम को विद्रोह शांत करने की परवाह नहीं थी। यारोबाम और येहू दोनों के विषय में यह भविष्यवाणी थी कि वे राजवंशों की स्थापना करेंगे; परन्तु दोनों ने भविष्यवाणी की आशाओं को पूरी तरह से निराश किया, अतः, सामरिया और इस्राएल के अश्शूर के सामने घुटने टेकने के बाद यहूदा के छोटे राज्य ने अपनी पूरी सामर्थ से "पूरी राष्ट्रीय भावना से अपने आप को इकट्ठे किया।"

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बाइबल इतिहास का मुख्य उद्देश्य सच्चे धर्म के मूल और उसके विकास को खोजना है। इब्रानी इतिहास का इसी उद्देश्य के प्रकाश में अध्ययन किया जाना चाहिए। इस प्रकार देखने से, दक्षिणी राज्य के चार सौ वर्षों को पतन और पुनः बहाली के चार कालों में बांटा जा सकता है जिसमें हर काल पूरी तरह से उस समय के शासन करने वाले राजाओं के चरित्र से सम्बन्धित है। यह स्मरण रखा जाएगा कि इस्राएल के विपरीत यहूदा में केवल एक ही राजवंश रहा और वह राजवंश दाऊद का था।

I. पहला पतन और पुनःसुधार
चार शासन, नब्बे वर्ष

1. **रहूबियाम और अबिय्याम के शासन में पतन।** –*क. धर्म।* सुलैमान के शासन से शुरू हुई मूर्तिपूजक प्रवृत्तियां अगले बीस वर्ष तक बढ़ती रहीं। नबियों के विरोधों के बावजूद, परमेश्वर की आराधना करने वाले कम होते गए, मूर्तिपूजक वेदियों की पूरे देश में

भरमार हो गई और लोगों में अनैतिकताएं फैल गईं।

ख. इस्राएल के साथ सम्बन्ध। –यारोबाम के अधीन दस गोत्रों के शासन पर बैठने पर रहूबियाम ने विद्रोह को शांत करने के लिए एक सेना तैयार की; परन्तु शमायाह नबी के सुझाव से, उसने कोशिश करनी छोड़ दी। परन्तु दो राज्य विरोधी बने रहे; और अबियाम के तीन वर्ष के शासन में, उसने समारैम के युद्ध में इस्राएल को भारी पराजय दी।

ग. शीशक का आक्रमण। –सुलैमान ने एक मिसरी राजकुमारी से विवाह किया था: परन्तु नील पर एक नया राजवंश उठा जो यारोबाम के साथ था। इस राजवंश के एक राजा शीशक ने पलिश्तीन पर आक्रमण करके यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया और सोने की चमक वाले इसके मन्दिर को लूट लिया। शीशक ने बाइबल के वृत्तांत की चौंकाने वाली पुष्टि कारनक के बड़े मन्दिर की दीवार पर उकेर कर की है।[2]

2. आसा और यहोशापात के शासन में सुधार। *–क. सुधार।* –शुद्धता और शक्ति दोनों में आसा का इकतालीस वर्ष का शासन पिछले दोनों राजाओं से अलग था। कई वर्ष तक उसके राज्य में शांति रही जो उसने मूर्तिपूजक वेदियों और आकृतियों को मिटाकर और यहोवा की आराधना फिर से बहाल करके सुधारी थी। यहोशपात ने पच्चीस वर्ष तक धार्मिकता से शासन किया। उसने अपने पिता के सुधारों को जारी रखा और उन्हें आगे बढ़ाया, धार्मिक शिक्षा प्रदान की और न्यायिक प्रणाली को फिर से संगठित करके उसमें सुधार किया।

ख. इथोपियाई ज़ेरह का आक्रमण। –ज़ेरह की अगुआई में इथोपियाइयों के एक आक्रमण से आसा की शांति भंग हो गई। आसा ने परमेश्वर के सामने सच्चे मन से प्रार्थना करते हुए युद्ध किया और इतनी निर्णायक विजय पाई कि उस समय से लेकर तीन सौ वर्ष तक यहूदा पर कोई और आक्रमण न हुआ। आसा ने एक बड़ी सभा करके इस विजय का जश्न मनाया, जिसमें राष्ट्रीय वाचा फिर से दोहराई गई और सुधार का काम और आगे बढ़ाया गया।

ग. विवाह का समझौता। –अपने जीवन के अंतिम भाग में आसा ने इस्राएल के विरुद्ध सिरिया के साथ एक समझौता किया। यहोशापात ने इस्राएल के साथ एक समझौता करके जिसमें उसने विवाह में आहाब की बेटी को अपना बेटा दिया और सीरियाइयों के विरुद्ध अहाब की सहायता की, अपने पिता की नीति को पलट दिया।

II. दूसरा पतन और सुधार
नौ शासन, दो सौ वर्ष

1. पतन। *–क. यहोराम और अतल्याह।* –यहोशापात का पुत्र याहोराम गद्दी पर बैठा। उसने अहाब की बेटी अतल्याह से विवाह किया था। उसने यहूदा में बड़ी गड़बड़ी की और अपनी मां वाली बाल पूजा करवाई। आसा और यहोशापात का काम अधूरा रहा। आठ वर्ष बाद याहोराम की गद्दी पर उसका बेटा अहज्याह बैठा; परन्तु एक वर्ष में ही इस्राएल के येहू का अंत अहाब के घर आने पर निर्दयी मौत से हो गया। अतल्याह बच गई, उसने सरकार

के शासन को कब्ज़े में कर लिया और शाही परिवार की हत्या कर दी परन्तु नवजात योआश बचा रहा, और छह वर्ष तक वह यहूदा की ईजेबेल से बढ़कर थी। दाऊद का परिवार अब एक बच्चे तक सिमट गया, जबकि मूर्तिपूजक रानी उसके सिंहासन पर बैठ गई; दाऊद का वंश खत्म होने के कगार पर था; यहोशापात की विवाह करने की गलत नीति के कारण इतना बुरा परिणाम हुआ।

ख. योआश और उसकी प्रतिक्रिया। –अंत में एक बुज़ुर्ग महायाजक यहोयादा की अगुआई में जिसने योआश को गद्दी पर बिठाया, एक विद्रोह में वह मारी गई। कुछ वर्ष तक ऐसा लगा जैसे राज्य शुद्धता के अपने पिछले दिनों में चला गया है; परन्तु यहोयादा की मृत्यु के बाद फिर से पतन शुरु हो गया और जकर्याह नबी योआश के शासन में शहीद हो गया।

ग. उज्जिय्याह। –बाद के तीन राजाओं अर्थात अमस्या, उज्जिय्याह और योताम में से उज्जिय्याह सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। यह शक़्तिशाली और मुज़्यतः बावन वर्षों का एक खुशहाल शासन था। उसकी सफलताएं उसका विनाश थीं। धूप जलाने की परिकल्पना करके जो राजा का नहीं बल्कि याजक का काम था, उसे कोढ़ हो गया, जिससे वह कभी चंगा नहीं हो पाया।

घ. अहाज और विश्वास त्याग। –मूर्तिपूजक प्रभाव आहाज के शासन तक बढ़कर खुलेआम और आम लोगों में हो गए। हर जगह बाल की मूर्तियों और वेदियों से संतुष्ट न होकर, ''उसने अपने बेटे को भी आग में होम कर लिया''[3]; जिसमें उसने उसे मोलक देवता के सामने बलिदान किया। नैतिक पतन के बाद राजनैतिक पतन हुआ। एदोमियों, पलिश्तियों, सीरियाइयों, और यहां तक की इस्राएल से घबराकर, जो अब अपने पतन के निकट था, अहाज ने भारी कर चुकाकर अश्शूर के साथ एक सैनिक समझौता किया जो अब पूरी सामर्थ में था।

2. हिज़किय्याह के शासन में सुधार। –*क. यशायाह और सुधार।* –हम यहूदा के उन प्रारज़्भिक भविष्यवज़्ताओं अर्थात योएल, आमोस, मीका, नहूम और यशायाह के काल में पहुंच गए हैं जिनके लेख हमारे पास हैं। यशायाह, जिसके भविष्यवाणी के लेखों को, ''सुसमाचार की पांचवीं पुस्तक'' कहा जाता है, चार इलाकों के सब भागों में प्रचारित की गई, उसकी सलाह दी गई और भविष्यवाणी की गई। हिज़कियाह के शासन में वह सबसे प्रसिद्ध व्यज़्ति है। वास्तव में वह यहूदा का पहला नबी है जिसमें याजक और राजा दोनों की झलक है। इस्राएल में एलिय्याह और अलीशा ने अपने साहसिक व्यज़्तित्वों से राजाओं के कद को छोटा कर दिया। यशायाह यहूदा में ऐसा स्थान पाने वाला पहला व्यज़्ति है। वह नबी होने के साथ-साथ राजनेता भी है और अधिकांश शाही दरबार में ही मिलता है। यद्यपि उसके तीखे शज़्द अहाज के शासन में खो गए लगते हैं, परन्तु अंत में उसका फल अवश्य मिला। यद्यपि उज़्री राज्य अश्शूर, हिज़कियाह के साथ अंतिम संघर्ष कर रहा था, परन्तु यशायाह के इस सुझाव से प्रेरणा पाकर वह धार्मिक सुधार करके यहूदा को नया जीवन दे रहा था। दाऊद के समय के बाद सिंहासन पर इतने स्पष्ट और दृढ़ उद्देश्य के साथ कोई राजा गद्दी पर नहीं बैठा था। बाल की घृणित पूजा और मोलक की खतरनाक रीतियों से यहोवा की

आराधना करने का रास्ता खुला। उसने मूसा के वह समय का सांप नष्ट कर दिया जो मूर्तिपूजा का एक माध्यम बन चुका था, और यरूशलेम में इस्राएल के बाकी बचे लोगों को जश्न में भाग लेने का निमन्त्रण देकर इस्राएल में फसह के पर्व को फिर से शुरू किया।

ख. सन्हेरीब का आक्रमण। –इस शासन से अश्शूर के सन्हेरीब का प्रसिद्ध आक्रमण जुड़ा हुआ है। अहाज अश्शूर को कर देने वाला बन गया था; परन्तु यशायाह की सलाह के विरुद्ध हिज़किय्याह ने अश्शूर के मुकाबले एक मिसरी समझौता करके कर देने से इन्कार कर दिया। सन्हेरीब ने यहूदिया पर आक्रमण कर दिया, बहुत से नगरों को कज़्जे में ले लिया, दो लाख बंदी बनाकर ले गया और यरूशलेम को घेरा डाल लिया। उसे एक मिसरी आक्रमण से और किसी रहस्यमयी विपदा से पीछे हटना पड़ा, एक ही रात में उसके एक लाख पचासी हज़ार लोग मारे गए। बायरन ने अपनी कविता के आरज़्भ में इस घटना को यादगारी बना दिया है: "अश्शूरी लोग झुण्ड पर भेड़िए की तरह टूट पड़े।" नीनवे में सन्हेरीब के शिलालेख उसकी सफलताओं का स्मरण दिलाते हैं परन्तु इस विपज़ि को नहीं, यद्यपि हेरोदोतस इसका उल्लेख करता है।

III. तीसरा पतन और सुधार
एक शासन, नज़्बे वर्ष

1. मनश्शै और आमोन के राज्य में पतन। –हिज़किय्याह और यशायाह के सुधार केवल अस्थाई ही सिद्ध हुए। कोई संदेह नहीं कि मूर्तिपूजा हर तरफ थी। हिज़किय्याह की मृत्यु के बाद फिर से उनका हाथ ऊपर हो गया और उसके पुत्र मनश्शै के शासन में, जिसने पचपन वर्ष राज्य किया, देश पहले से कहीं अधिक तेजी से गिरावट के रास्ते में चल पड़ा, हर तरह की मूर्तिपूजा शुरू हो गई; बाल की पूजा, मोलक की पूजा, कसदियों की तारों की पूजा, जादूगरी, भयंकर सताव जिसने यरूशलेम को लहू से भर दिया। –इस लज़्बे शासन के दौरान ऐसे अपराध हुए। यदि यहूदी परज़्परा पर यकीन किया जाए तो यशायाह को इसी समय में शहीद किया गया था। बाबूल में मनश्शै की अस्थाई दास्ता से वह कुछ सुधरा और उसने मूर्तिपूजा पर थोड़ी रोक लगाई; परन्तु उसके पुत्र आमोन ने अपने पिता की दुष्ट नीतियों की नकल की और एक विद्रोह में मारा गया।

2. योशिय्याह के शासन में सुधार। *–क. यिर्मयाह तथा सुधार के काम।* –आमोन की मृत्यु के बाद आठ वर्ष की उम्र में योशिय्याह को सिंहासन मिल गया। उसका इकज़्तीस वर्ष का शासन छोटे से राज्य के लिए सूर्य की चमक की अंतिम झलक थी। एक शाही सुधारक के रूप में उसका नाम हिज़किय्याह के साथ आता है; और यिर्मयाह किसी हद तक उसके लिए उतना ही महत्व रखता था जितना हिज़किय्याह के लिए यशायाह, यद्यपि प्रारज़्भिक सुधार हुल्दा नबिया की प्रेरणा से हुए लगते हैं, जबकि यिर्मयाह की सबसे बड़ी गतिविधि योशिय्याह की मृत्यु के बाद पड़ने वाले अंधकार के वर्षों में थी। सोलह वर्ष की आयु में, योशिय्याह ने काम अपने हाथ में ले लिए थे, और निजी तौर पर परमेश्वर की ओर मुड़ा था; बीस वर्ष की आयु में, उसने यरूशलेम को मूर्तिपूजा से शुद्ध किया; छज़्बीस की

आयु में, उसने मन्दिर की मरज़्मत का जिज़्मा लिया। मरज़्मत करते करते, मूसा की व्यवस्था की एक प्रति मिल गई, जो मनश्शै के शासन के इतने लज़्बे समय के दौरान लगता था कि खो गई होगी। इन्हीं शिक्षाओं और चेतावनियों से और प्रेरणा पाकर उसने शमूएल के समय तक मनाया जाने वाला सबसे प्रसिद्ध फसह फिर से शुरू किया। अश्शूर अब पतन की ओर जा रहा था और योशिय्याह ने दस गोत्रों के पुराने क्षेत्र पर अपनी शज़्ति बढ़ा ली; कम से कम उसने बेतेल और सामरिया के दूसरे नगरों में बछड़े की पूजा तो खत्म कर दी, और निजी तौर पर सुधार के काम को देखने के लिए राज्य का भ्रमण किया।

ख. मगिद्दो का युद्ध। –योशिय्याह के प्रसिद्ध शासक का विनाशक अंत हुआ। महान अश्शूरी और मिसरी साम्राज्य फिर युद्ध करने लगे। फिरौन–नको ऊपरी फरात पर करकमिश पर कज़्जा करने वाला था। योशिय्याह ने मूर्खता से हस्तक्षेप कर दिया और मगिद्दो के युद्ध में प्राण गंवा बैठा। वह अंतिम राजा था जो ''जिस मार्ग पर उसका मूल पुरुष दाऊद चला ठीक उसी पर चला,''[4] और राष्ट्रीय वाचा के प्रति निष्ठावान था। यिर्मयाह का दुख बड़ा था, जो अच्छे राजा पर शोक गीत में व्यज़्त किया गया।

IV. अंतिम पतन और दासता

1. नैतिक पतन। –योशिय्याह के सुधारों से स्पष्टतया व्यापक तौर पर लोगों के मनों पर असर नहीं हुआ था। बल्कि वे शाही अधिकार से जबर्दस्ती थोपे गए थे और राजा के साथ ही जल्दी से खत्म हो गए। कुछ चुनिन्दा लोगों का एक छोटा सा दायरा था, जिसे यिर्मयाह का समर्थन था, और युवक दानिएल और उसके साथी उसमें से थे, जो एक भावी राष्ट्रीय जीवन का बीज अर्थात सच्चा इस्राएल था; परन्तु देश का जन समूह आशाहीन भ्रष्ट था। यहां तक कि यशायाह ने भी एक सौ से भी अधिक साल पहले लिखा था, ''हाय, यह जाति पाप से कैसी भरी है! यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है! इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं, ये लड़केबाले कैसे बिगड़े हुए हैं! उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया, उन्होंने इस्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है! ... तुज़्हारा सिर घावों से भर गया है, और तुज़्हारा हृदय दुख से भरा है। नख से सिर तक कहीं भी कुछ आरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोड़े ही मार के चिह्न और सड़े घाव हैं जो न दबाए गए, न बान्धे गए, न तेल लगाकर नरमाए गए हैं'' (यशायाह 1:4–6)। और यिर्मयाह के लेखों से इस अंतिम काल के द्वारा अंधकार के बढ़ने का पता चलता है। मूर्तिपूजा, मतवालापन, लोभ, वासना और खतरनाक हिंसा इसकी प्रमुज़्य बुराइयां हैं। यह नैतिक पतन राजनैतिक विनाश से पहले आने वाला था।

2. दासताओं का क्रम। –योशिय्याह के बाद चार राजा आए: यहोआहाज़, यहोयाकीम, यहोयाकीन, और सिदकिय्याह। इसमें तीसरा भले योशिय्याह का पोता व अन्य पुत्र थे। ये सब या तो मिसर की या बाबुल की कठपुतलियां थीं; ज़्योंकि इस काल के प्रारज़्भिक भाग में, अश्शूर की घमण्डी राजधानी नीनवे, जिसने सदियों तक पश्चिमी एशिया पर प्रभुत्व किया था, मादा और बाबुल के इकट्ठे हमलों के सामने टिक न पाई। इसके बाद बाबुल और मिसर चज़्की के ऊपर और नीचे के पत्थर थे जिनके बीच यहूदा पिसा। फिरौन–नको यहोआहाज़

को ले जाकर उसके भाई यहोयाकीम को गद्दी पर बैठा देता है। परन्तु बाबुल एशिया में एक विरोधी के रूप में मिसर को सह नहीं पाएगा। बाबुल के शक्तिशाली राजा नबूकदनेस्सर द्वारा यहूदिया पर एक के बाद एक आक्रमण और उसके लोगों को बंदी बनाने से यह नाटक समाप्त हो जाता है।

क. पहली दासता। –उसने यरूशलेम को कब्ज़े में ले लिया (606 ई.पू.), परन्तु अपने साथ दासता में कुछ लोगों को ले जाने के लिए संतुष्ट होकर जिनमें दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो भी थे, राजा यहोयाकीम को छोड़ दिया। उनके शाही परिवार और अपने राष्ट्रीय धर्म के प्रति निष्ठावान राजकुमार होने के कारण, राजा निः संदेह उनसे पीछा छुड़ाकर खुश था। ग्यारह वर्ष के शासन के बाद उसकी भयानक मृत्यु हुई।

ख. दूसरी दासता। –597 में नबूकदनेस्सर ने दूसरा आक्रमण किया। वह राजा यहोयाकीन को ले गया जिसे पैंतीस वर्ष तक बंदी बनाए रखा गया। दस हज़ार उच्च वर्ग के लोगों को लेकर यहेजकेल नबी, उसी समय दासता में गया। सिदकिय्याह को सिंहासन पर बिठाया गया और ग्यारह वर्ष तक फरात के महान राजतन्त्र की कठपुतली के रूप में उसने राज्य किया।

ग. तीसरी दासता। –इस सारे समय वहां यरूशलेम में एक मिसरी दल था जिसने जो बाबुल के जुए में गुस्से में था और मिसर से समझौते का पक्ष लेता था। यिर्मयाह ने देश पर बाबुल में सत्तर वर्ष की दासता की परमेश्वर के न्याय की घोषणा कर दी और उस शक्ति के अधीन होने का सुझाव दिया। इसके लिए उसे एक घृणाजनक कालकोठरी में कैद किया गया। अंत में किसी नये विद्रोह से एक बार फिर यहूदा के विरुद्ध नबूकदनेस्सर की सेनाएं आ गईं। 586 में, एक दुखद घेरे के बाद, उसने यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया, सिदकिय्याह के सामने उसके बेटों को कत्ल कर दिया, उसकी आंखें निकाल दीं और उसे ज़ंजीरों में बांधकर बाबुल ले गया। नगर की दीवारें गिरा दी गईं, मन्दिर और महल जला दिए गए और उच्च वर्ग के लोगों को दासता में ले जाया गया। दाऊद का नगर यरूशलेम, बहुमूल्य यादों का नगर बिल्कुल खत्म हो गया, उसमें केवल कुछ वफ़ादार लोग ही बचे, जिन्होंने सत्तर वर्ष के निर्वासन के दौरान पवित्र नगर के लिए तड़पते थे और प्रतिज्ञा के लौटने के इंतजार में थे।

पाद टिप्पणियां

[1]इब्रानी इतिहास की किसी भी विस्तृत और सम्पूर्ण भविष्यवाणी के लेखों का अध्ययन करना आवश्यक है। वे उस देश की सामग्री, नैतिकता, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि निर्वासन के बाद एज्रा द्वारा लिखित इतिहास, सम्भवतया दाऊद और उसके परिवार का इतिहास था। शाऊल का शासन और उत्तरी राज्य का इतिहास लगभग पूरी तरह से खत्म हो गए हैं। [2]एडरशैम, ''हिस्ट्री ऑफ़ इस्राएल एण्ड ज्यूडा,'' अंक 5, पृ. 129, 130 देखिए। [3]2 राजा 16:3. [4]2 राजा 22:2.